शीत और वसंत शत्रु नहीं हैं। शीत तैयारी है, वसंत प्रसव, शीत तप है, वसंत फलन। यदि केवल शीत हो, तो जीवन जम जाए यदि केवल वसंत हो, तो जीवन बिखर जाए। इसी संतुलन में सृष्टि चलती है, इसी द्वंद्व में जीवन सांस लेता है।

शीत को अपने ऊपर अभिमान था, हो भी क्यों नहीं वह शिव को प्रिय था। शिव की तरह वह भी श्वेत था और शिव की तरह ही वह संयमित था। उसके आने पर उछलती-कूदती नदी भी हिम-शीतल बनकर रुक जाती थी। सब कुछ जम जाता था शांत और निर्विकार। बर्फ की चादर ओढ़े प्रकृति निस्तब्ध और निर्विकार हो जाती थी।

जैसा कि होता है, अंत से ही आरंभ होता है। शिव ने जिस कामदेव को जला दिया था, वही उनके प्रिय शीत का शत्रु था। वह आता और निर्विकार हुई प्रकृति में विकार आ जाता। यह विकार दोष नहीं था, वह विकार जीवन की गति था। विकार ही वसंत है, जो जीवन को बदल देता है, पूरा का पूरा बदल देता है।

ऐसा ही है वसंत, क्योंकि वही आरंभ है। उसके आते ही जमी हुई नदियां पिघलने लगती हैं। वह घास, जिसे बर्फ ने जकड़ दिया था, वह भी पिघल जाती है; उसमें कोपलें फूट पड़ती हैं। वृक्षों में नई कोंपलें आती हैं, चारों ओर हरियाली छा जाती है। कोयल कूक उठती है, नायिका के हृदय में हूक उठती है। सरसों के खेतों में सुंदर फूल खिल उठते हैं।

यही वसंत की महिमा है कि सब कुछ बदलने लगता है।

शीत और वसंत की यह कशमकश केवल ऋतुओं की नहीं, अस्तित्व की भी कशमकश है।

शीत ठहराव चाहता है, वसंत प्रवाह...

शीत संरक्षण है, वसंत परिवर्तन...

शीत कहता है - 'रुको। स्थिर रहो। जो जैसा है, वैसा ही बना रहने दो। शांत रहो, निर्विकार रहो, किसी स्पंदन की आवश्यकता नहीं।'

और वसंत उत्तर देता है - 'यदि सब कुछ रुक गया, तो जीवन कहां बचेगा? यदि स्पंदन नहीं, तो श्वास किस काम की?'

शीत का सौंदर्य मौन में है। वह सब कुछ ढंक देता है दोष भी, गुण भी। वह पीड़ा को भी शांति का नाम दे देता है।

उसकी श्वेतता भीतर-भीतर जड़ता रचती है। सब कुछ सुरक्षित तो लगता है, पर जीवित नहीं।

वसंत उस सुरक्षा को तोड़ता है। वह बर्फ की चादर हटाता है, निर्ममता से नहीं, पर अनिवार्यता से। वसंत कहता है - **'अब बहुत हो गया ठहराव, अब गति आवश्यक है।'**

इस संघर्ष में शीत आहत होता है। उसे लगता है कि उसका संयम, उसकी तपस्या, उसकी श्वेत पवित्रता को अपमानित किया जा रहा है।

पर वसंत जानता है संयम यदि सड़ जाए, तो वह तप नहीं, बोझ बन जाता है। इसलिए वसंत आता है। वह जमी हुई नदियों से कहता है 'बहना सीखो' वह वृक्षों से कहता है 'जो भीतर दबा है, उसे बाहर लाओ।' वह धरती से कहता है **'अब गर्भ धारण करो।'**

और शीत चाहकर भी उसे रोक नहीं पाता, क्योंकि शीत स्वयं जानता है उसका भी प्रयोजन पूरा हो चुका है। यही इस कशमकश का रहस्य है

शीत और वसंत शत्रु नहीं हैं। शीत तैयारी है, वसंत प्रसव, शीत तप है, वसंत फलन। यदि केवल शीत हो, तो जीवन जम जाए यदि केवल वसंत हो, तो जीवन बिखर जाए। इसी संतुलन में सृष्टि चलती है, इसी द्वंद्व में जीवन सांस लेता है।

और जब-जब जीवन में सब कुछ ठहर जाए, समझ लेना वसंत आने ही वाला है। हमारा जीवन भी ऋतु की भांति है। जैसे शीत ऋतु में सब कुछ शांत हो जाता है, वैसे ही जीवन में भी कभी-कभी सब कुछ रुका हुआ प्रतीत होता है।

शीत ऋतु से ठिठुरे हुए प्राणियों में नवजीवन का संचार वसंत करता है। वसंत केवल एक ऋतु का नाम नहीं है, बल्कि यह अपने भीतर आगमन, विस्तार और उल्लास का गूढ़ अर्थ समेटे हुए है।

वसंत शब्द की उत्पत्ति संस्कृत धातु 'वस' से मानी जाती है। वस् का अर्थ है - निवास करना, ठहरना, प्रकट होना, फैल जाना।

जब यह धातु 'अन्त' प्रत्यय से जुड़ती है, तो बनता है वसन्त अर्थात वह काल जिसमें जीवन, रस और सौंदर्य प्रकट होकर चारों ओर फैल जाता है।

ऋषियों ने इस ऋतु को वसंत इसलिए कहा क्योंकि इसी समय प्रकृति में जीवन का वास होता है। वृक्षों में नवजीवन आकर बस जाता है, पुष्पों में सुगंध स्थिर होकर फैलती है और मनुष्य के मन में उल्लास निवास करने लगता है।

पौराणिक दृष्टि से **वसंत को कामदेव का मित्र कहा गया है। जहां कामदेव प्रेम की चिंगारी हैं, वहीं वसंत वह वातावरण है जिसमें प्रेम पनपता और टिकता है। वसंत का आगमन उल्लास, संगीत और सौंदर्य के साथ जुड़ा है। कोयल की कूक, आम्र-मंजरियों की सुगंध, रंग-बिरंगे पुष्प, ये सब प्रेम को केवल जन्म नहीं देते, उसे टिकाते भी हैं। वसंत सिखाता है कि प्रेम केवल आवेग नहीं, एक लय है; केवल आकस्मिक नहीं, एक क्रमिक प्रस्फुटन है।**

इस प्रकार वसंत और कामदेव का संबंध हमें यह बोध कराता है कि प्रेम के लिए केवल भावना पर्याप्त नहीं उसके लिए अनुकूल परिस्थिति, कोमलता और स्वीकार का वातावरण भी उतना ही आवश्यक है। जहां कामदेव हृदय में अग्नि प्रज्वलित करते हैं, वहीं वसंत उस अग्नि को दीपक बना देता है जो न जलाता है, न बुझता है, केवल प्रकाश देता है।

इसलिए कहा गया - **प्रेम बिना वसंत के नहीं ठहरता, और वसंत बिना प्रेम के अधूरा है।**

एक सांकेतिक अर्थ यह भी है कि - **शीत ऋतु मन की जड़ता है ग्रीष्म संघर्ष है, वर्षा करुणा है और वसंत चेतना का उत्सव है।**

इसलिए वसंत का नाम केवल मौसम नहीं बताता, बल्कि यह संकेत देता है - अब जीवन रुकने नहीं, बहने आया है। अब सौंदर्य छिपने नहीं, प्रकट होने आया है। यही कारण है कि भारतीय परंपरा में वसंत को ऋतुराज कहा गया शुभ आरंभों की ऋतु माना गया और ज्ञान, कला, प्रेम तथा साधना का अनुकूल काल स्वीकार किया गया

वसंत नाम नहीं, जीवन के पुनः जागरण की घोषणा है

अंततः शीत और वसंत का द्वंद्व हमें संतुलन सिखाता है। केवल शीत हो तो जीवन जम जाता है, केवल वसंत हो तो जीवन बिखर जाता है। भारतीय दृष्टि में यही कारण है कि वसंत को ऋतुराज कहा गया क्योंकि वह तप के बाद फलन का, मौन के बाद गीत का और ठहराव के बाद प्रवाह का प्रतीक है। जब जीवन में सब कुछ रुका हुआ लगे, तब उसे अंत नहीं समझना चाहिए; वह संकेत है कि भीतर कहीं वसंत जन्म ले चुका है और शीघ्र ही जीवन को फिर से बहना है।